मुंबई –संजय जैन, कल्याण, मुंबई । कल्याण दिगम्बर जैन समाज द्वारा भगवान महावीर स्वामी का जन्मकल्याणक महोत्सव बड़े ही धूमधाम से मनाया गया । श्री 1008 चन्द्रप्रभु दिगंबर जैन मंदिर, में भगवान महावीर स्वामी की अभिषेक के साथ सामूहिक पूजा हुई, जिससे मंदिर का वातावरण भक्तिमय हो गया । समाज के सभी लोगो ने पूर्ण मनोयोग से बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया । महावीर स्वामी के जन्मकल्याणक महोत्सव का पूरा कार्यक्रम ''कल्चर कमेटी श्री 1008 चन्द्रप्रभु दिगंबर जैन मंडल'' कल्याण के द्वारा आयोजित किया गया । कल्याण में पहली बार बैंड बाजों के साथ भव्य शोभा यात्रा निकली गई, जो कि शहर के मुख्य मार्ग से होती हुयी पुन: मंदिरजी पर आयी । मार्ग में श्रद्धालुओं ने भजनों के साथ गरबा खेला और जिनवर की भक्ति गीत गाते हुए और नाचते हुए शोभायात्रा में एक साथ चलकर भव्यता प्रदान की । चल समारोह का संचालन संजय जैन, श्री विपिन जैन, अरूण कुमार जैन एवं विवेक सिंघई के साथ ही सुनील जैन, अभय जैन जी कर रहे थे ।

कार्यक्रम की शुरूआत मंगलाचरण और णमोकार मंत्र से हुई जो कि सपना गंगवाल के साथ उपस्थित समाजजनों ने गाया तत्पश्चात मुख्य अतिथि श्री अनुराग जैन और विशेष अतिथि श्री इंद्रा कुमार जैन के साथ ट्रस्ट मंडल श्री विजय कुमार कासलीवाल, मंत्री श्री जयंत किलेदार तथा विपिन जैन, अभय जैन ने दीप प्रज्जवलित कर सांस्कृतिक कार्यक्रमों की शुरूआत की, सर्वप्रथम कु. जिया गंगवाल ने भगवान महावीर स्वामी पर अपने विचार प्रकट किये । फिरोजाबाद से पधारी श्रीमती इंदु जैन और उनकी बेटी कशिश जैन ने बहुत ही सुरीले भजन गाये । इसके बाद पाठशाला के बच्चों ने एक लघु नाटिका प्रस्तुत की जो कि श्रीमती श्वेता जैन के द्वारा लिखी गई थी । इसके बाद समाज के जो बच्चे मेरिट में आयें थे, उन्हें भी सांस्कृतिक समिति द्वारा अवार्ड के साथ एक प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया । कमेटी के सभी सदस्यों को उपस्थित अतिथियों द्वारा प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया

मुख्यअतिथि श्री अनुराग जैन और श्री इंद्रकुमार जी जैन ने अपने उद्बोधन में धार्मिक बातें कही । समाज को एकजुटता दिखाने के लिए सदैव तत्पर रहने को कहा । अनुराग जैन ने सटीक शब्दों में धर्म के साथ-साथ बच्चों के भविष्य पर सबसे ज्यादा ध्यान रखने पर जोर दिया । आपने बहुत ही अच्छे सूत्रों के साथ अपना उद्बोधन को पूरा किया, जिसे समाज के हर व्यक्ति ने बहुत ही सराहा । कार्यक्रम का संचालन संजय जैन एवं आभार समाज मंत्री ने व्यक्त किया ।

जबलपुर – अरविंद जैन, जबलपुर । श्री दिगम्बर गोलालारीय जैन नवयुवक सभा के तत्वावधान में प्रतिवर्ष की भांति वृद्धाश्रम एवं कुष्ठाश्रम जाकर भगवान महावीर स्वामी 2616 वीं जयंती के उपलक्ष्य में श्री राजकुमार जैन द्वारा भगवान महावीर स्वामी के सत्य, अहिंसा, जियो और जीने दो के नारे लगाते हुये संदेशों का वाचन किया गया। कार्यक्रम का संचालन संस्था अध्यक्ष अरविंद जैन द्वारा किया गया। कार्यक्रम में जयकुमार जैन, डॉ. सुनील जैन, अश्विन जैन, आलोक जैन, प्रीती जैन, श्वेता ऋषभ मोदी, सविता, रीतेश मोदी, श्रीमती अनुराधा जैन, श्रीमती सपना जैन, श्रीमती ज्योति जैन, श्रीमती रीना जैन का विशेष सहयोग रहा। एक दिन पूर्ण श्रीगणेश प्रसाद वर्णी पाठशाला के बच्चों द्वारा भव्य नृत्य-नाटिका, भगवान आदिनाथ के द्वारा बताये गये षठकर्मों का नृत्य नाटिका के माध्यम से वर्णन किया गया । महावीर जयंती के जुलूस में शामिल होने चंद्रप्रभ दिगम्बर जैन मंदिर संगम कालोनी से पालकी निकाली गई, मार्ग में पूजन, आरती एवं जुलूस का स्वागत किया गया, सकल जैन समाज की शोभायात्रा हनुमानताल बड़े जैन मंदिर से प्रारंभ होकर शहर के मुख्य मार्गो से होती हुयी कमानिया गेट आयी। यहां से अन्य झांकियाँ एवं पालकियाँ शोभायात्रा में सम्मिलित हुई । जुलूस में शहर के 15 मंदिरों की झांकियाँ एवं रजत पालकी, 4 श्री जी के रथ, 10 बग्घी, 20 बैण्ड पार्टी, 5 धमाल पार्टी, 25 घोड़े एवं बड़ी संख्या में श्रद्धालुजन सम्मिलित हुए। शोभायात्रा का जुलूस विभिन्न मार्गों से होता हुआ पुन: कमानिया गेट पर आया, जहां महाशांतिधारा हर्षोल्लासपूर्वक संपन्न हुयी । शोभायात्रा में माननीय सांसद, विधायक, महापौर एवं पार्षदगण सम्मिलित हुये।

तालबेहट – विशाल जैन पवा, तालबेहट। भगवान महावीर स्वामीजी ने हमें जैन धर्म के पांच महा सिद्धांत अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह का संदेश दिया, लेकिन आज लोगों ने अहिंसा के 'अ' को सत्य में जोड़कर अचौर्य का अब्रह्मचर्य में जोड़ दिया और अपरिग्रह के 'अ' को तिजोरी में डालकर पांच हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह में लिप्त हो गये। यह उद्गार 24 में तीर्थकर वर्तमान शासन नायक भगवान महावीर स्वामी के 2015 वें जन्म कल्याणक महोत्सव पर आचार्य विद्यासागर जी महाराज की परम प्रभावक शिष्या आर्यिका रत्न 105 पूर्णमति माताजी ने पारसनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में व्यक्त किये। इस अवसर पर सुबह प्रभात फेरी, अभिषेक पूजन के उपरांत श्रीजी की भव्य शोभायात्रा निकाली गयी। विमानोत्सव के कार्यक्रम में सबसे आगे तैलीय चित्रों की झांकी, डी.जे. बैण्ड की धार्मिक धुनों पर नृत्य करते युवा, आर्यिका संघ, श्रीजी को विमान में लेकर श्रद्धालु, सत्य-अहिंसा जियो और जीने दो के नारे लगाते हुए धर्मावलंबी एवं बग्गी में सवार महाराजा सिद्धार्थ और महारानी त्रिशला बने श्रीमती नेहा चौधरी, महावीर जैन चल रहे थे। शोभायात्रा पारसनाथ दिगम्बर जैन मंदिर से प्रारम्भ हुयी एवं नगर भ्रमण के बाद वापस मंदिर जी पहुँची। ब्र. दीपक भैयाजी के निर्देशन में कलशाभिषेक-शान्तिधारा, फूलमाल का आयोजन किया गया। इस अवसर पर धर्म सभा को सम्बोधित करते हुए माता जी ने कहा कि हमें बच्चों के जन्मदिवस पर पाश्चात्य की विकृतियों के वशीभूत होकर मोमबत्तियां नहीं बुझाना चाहिए, हमें तो ज्ञान की ज्योति जलाकर जन्मदिवस नहीं जिन दर्शन दिवस मनाना चाहिए। केक को काटकर चाकू से खिलाना-खाना हमारे देश की संस्कृति नहीं, भारतीय संस्कृति में तो दान देने की परम्परा है, आहार दान देने वाला कभी भूखा नहीं रहेगा, औषधि दान देने वाला कभी बीमार नहीं पड़ेगा, शास्त्र दान करने वाला कभी मंद बुद्धि नहीं होगा और जीवों को अभय दान देने वाला कभी भयभीत नहीं होगा, अकाल मौत नहीं मरेगा। आर्यिका माताजी ने कहा कि हमारे आचरण और विचार सुगंधित और सुन्दर फूल की तरह होना चाहिए, क्योंकि व्यक्तित्व से ही आदमी महान बनता है जिसमें मानवता और इंसानियत होती है। नेता वोट चाहता है, अमीर नोट चाहता है और महत्वाकांक्षी सपोर्ट चाहता है लेकिन महावीर स्वामी लोगों को इंसान बनाने के लिए उनसे खोट चाहते है । अत: कल्याणक महोत्सव के अवसर पर अपनी बुराईयों को छोड़कर चेतन्य स्वरुप आत्मा को प्रगट करने के लिए महावीर स्वामी के आदर्शो को अंगीकार कर इंसानियत को धारण करना चाहिए। सायं काल की बेला में गुरु भक्ति, मंगल आरती एवं भजन संध्या के बाद विद्यासागर पाठशाला के बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये, विराट प्रश्नमंच का आयोजन किया गया एवं भगवान महावीर स्वामी पर आधारित सुंदर नाटक की प्रस्तुति दी। 21 अप्रैल को आत्म बोध की कक्षा का शुभारम्भ किया गया, जिसमें डा. नरेन्द्र कुमार जैन, अक्षय टडैया ललितपुर ने आचार्य विद्यासागर जी महाराज के चित्र का अनावरण कर ज्ञानद्वीप प्रज्वलित किया, वीर सेवा दल ने मंगल कलश की स्थापना की एवं नव युवक मंडल ने आर्यिका माता जी को शास्त्र भेंट किया। इस अवसर पर आर्यिका पूर्णमति माताजी ने कहा कि चैतन्य स्वरुप आत्मा को प्रगट करने के लिए ज्ञान और दर्शन बहुत ही जरुरी है, जिससे चारित्र का निर्माण होता है। शिविर के पहले दिन णमोकार महामंत्र का महत्व, भावार्थ समझाया। कार्यक्रम में भारी संख्या में जैन श्रद्धालु उपस्थित रहे। संचालन पूर्व पार्षद चक्रेश जैन ने किया।

पूना – आशीष जैन, रोहित जैन, पूना । मुनिश्री नियमसागरजी महाराज की प्रेरणा से आज एक अदभुत घटना देखने को मिला जब 10 मुसलमान कारीगरों ने आजीवन मदिरा, मांस और मधु का त्याग किया । सच्चे अर्थों में महावीर भगवान के जन्म कल्याणक को मनाने का यही फलितार्थ हैं । ये कारीगर चिंचवड में बने मंदिर की वेदी आदि का निर्माण कर रहे है । निमित्त प्रबल हो तो उपादान में परिवर्तन अवश्य होता है ये आज हमने प्रत्यक्ष देखा है । हम इन मुस्लिम कारीगरों की त्याग की बहुत-बहुत अनुमोदना करते है । पुणे के चिंचवड क्षेत्र में मुनिश्री 108 नियमसागर जी महाराज, मुनिश्री 108 प्रबोधसागर जी महाराज, मुनिश्री 108ऋषभसागर जी महाराज, मुनिश्री 108 अभिनंदनसागर जी महाराज एवं मुनिश्री 108 सुपार्श्वसागर जी महाराज के सानिध्य में महावीर जन्म कल्याणक तिथि पूरे उत्साह के साथ मनाई गई । मुनिश्री नियमसागर जी महाराज ने अपने प्रवचन में जैन समाज को प्रेरणा दी की पूरा समाज मिलकर हर मंदिर के बाहर शुद्ध शाकाहारी और अहिंसक खाद्य पदार्थों / बेकरी आयटम की दुकान को खोल कर उसका संचालन करे, जिससे जैन श्रावको को बाहर की दुकानों से अशुद्ध, मांसाहार से मिश्रित और हिंसक खाद्य पदार्थ / बेकरी आयटम खरीदना न पड़े और श्रावक अभक्ष्य खाद्य पदार्थों के सेवन से बचे । महाराज जी ने बताया की म.प्र. में आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के आशीर्वाद और प्रेरणा से ऐसी दुकानें बहुत से मंदिरो के बाहर चल रही है । महाराज जी ने कहा कि यथार्थ में महावीर जन्म कल्याणक तिथि तब मनेगी जब हम भगवान महावीर स्वामी का 'जियो और जीने दो' का सन्देश चरितार्थ करेंगे । महाराज जी की प्रेरणा से चिंचवड में विगत कुछ वर्षों से श्रावक लोग गौ गुल्लक की योजना सफलतापूर्वक चला रहे हैं जिसमें गायों के संरक्षण व संवर्धन के लिये एक गुल्लक दी जाती है जिसमें श्रावक प्रतिदिन अपनी शक्ति अनुसार जीव दया के कार्य के लिये दान राशि डालते है और बाद में यह राशि गौशालाओं के संचालन के लिये एकत्रित कर भेज दी जाती है । प्रवचन के बाद पंच मुनिराज के सानिध्य में शोभा यात्रा निकाली गई जिसमें श्रावको के नारे गुंजायमान हुए। घोड़े बग्गियाँ बैंड आदि से यह शोभा यात्रा अधिक भव्य बन गई थी ।